यज्ञ प्रार्थना

पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्जवल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए।।

1. वेद की बोलें ऋचाएँ सत्य को धारण करें।
   हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें।।
2. अश्वमेधादिक ऋचाएँ यज्ञ पर उपकार को।
   धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को।।
3. नित्य श्रद्धा-भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
   रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।।
4. भावना मिट जाये मन से पाप अत्याचार की।
   कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नार की।।
5. लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिए।
   वायुजल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए।।
6. स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो।
   'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।।
7. हाथ जोड़ झुकाएँ मस्तक वन्दना हम कर रहे।
   'नाथ' करूणा-रूप करूणा आपकी सब पर रहे।।